जनजाति पारंपरिक बसाहट में बाह्य हस्तक्षेप गोधन न्याय योजना का सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव
(दंतेवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)

Jyoti Baya

सारांश :–प्रस्तुत अध्ययन में जनजाति पारम्परिक बसाहट में गोधन न्याय योजना जैसे बाह्य हस्तक्षेप का उनके सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव विषय पर आधारित है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य – जनजाति क्षेत्रों में निवास कर रहे आदिवासियों के बसाहटों में राज्य सरकार की योजना "गोधन न्याय योजना" जैसे बाह्य हस्तक्षेप का उनके सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस योजना के तहत उनकी आर्थिक –स्थिति के साथ–साथ सांस्कृतिक स्थिति पर भी इनका प्रभाव देखा जा सकता है। गोधन न्याय योजना से दंतेवाड़ा जिले में निवास कर रहे जनजातीयों का परिवेश बदल रहा है, दंतेवाड़ा में ग्राम पंचायतों की सहायता से गौठान में भिन्न–भिन्न क्रियाकलाप कर सकते है। चाहे गोबर एकत्रित करना, गौठानों की देखरेख, गौठानों में केंचुआ खाद बनाना जैसे कार्यो में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं। जनजातीयों की अपनी अलग पारम्परिक बसाहटें होती है, जो उनकी संस्कृति से जुडी होती है। वे अपने जीवन में किसी प्रकार का बाह्य हस्तक्षेप को सहज ही स्वीकार नही कर पाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है बाह्य हस्तक्षेप से उनकी सांस्कृतिक जीवन में प्रभाव पडेगा लेकिन गोधन न्याय योजना से उनके आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव देखने मिल रहा है, जिससे उनका आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन और अधिक सश्क्त हो रहा है। अध्ययन हेतु दंतेवाड़ा जिले के विकासखण्ड के ग्रामों से 100 उत्तदाताओं का चयन उद्देश्य पूर्ण निर्देशन प्रणाली के माध्यम से किया गया है। तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है।

शब्द कुंजी :– जनजाति, गोधन न्याय योजना, संस्कृति

प्रस्तावना :–प्राचीन समय से ही जनजातीय अपने पारंपरिक जीवन शैली, पारम्परिक रिति रिवाज व अपनी अलग सांस्कृतिक के लिए जाने जाते है वे किसी भी प्रकार के बाह्य हस्ताक्षेप को स्वीकार नही करते है क्योंकि उनको लगता है कि उनकी जीवन में बाधा उत्पन्न हो जाएगी इसलिए वे अपने पारम्परिक बसाहटो में बाह्य हस्तक्षेप को स्वीकार नही करते है। लेकिन जब बात जीवन शैली में सुधार व आर्थिक सामाजिक जीवन में परिवर्तन की हो तभी वे उन्हें स्वीकार करते है। जनजातीय क्षेत्रों में राज्य सरकार की योजनाओं का महत्व देखा गया है तथा जनजातीय इनमें बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे है। गोधन न्याय योजना जैसे बाह्य हस्तक्षेप से इनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति के साथ–साथ संस्कृति पर प्रभाव देखने को मिल रहा है। जैसा की हम देख सकते है। गोधन न्याय योजना के फलस्वरूप दंतेवाड़ा जिले में गौठानों का निर्माण किया गया है। इन गौठानों में जनजातीयों के आजीविका संवर्धन के साथ–साथ उन क्षेत्रों में रह रहे गौपालक किसानों को आर्थिक सहायता हेतु गौठानों व चारागाह का निर्माण विभिन्न ग्राम पंचायतों में किया जा रहा है। यह योजना जनजातीय क्षेत्रों के लिए आमदनी का जरिया बन गया है। जिसके फलस्वरूप उनकी अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल रही है। जिससे उनकी संस्कृति पर किसी भी प्रकार से प्रभाव नही पड़ रहा है तथा वे और सशक्त हो रहे है। दंतेवाड़ा जिले के अंतर्गत ग्रामपंचायत बालपेट के आश्रित ग्रामों भैरमबंद में निर्माण कार्य किया जा रहा है जिसमें केंचुआ खाद व सुपर कम्पोस्ट का निर्माण होने से वह उत्पादन व विक्रय का केन्द्र बना हुआ है। जनजातीय क्षेत्रों की महिलाएं खरीदी व निर्मित कार्य कर रही हैं तथा आत्मनिर्भर हो रही हैं। जनजातीयों के बसाहटों पर गोधन न्याय योजना एक वरदान साबित हो रही है। इस योजना का प्रभाव हम उनके सांस्कृतिक जीवन में भी देख सकते है। वे पहले उन्ही कार्यो तक सीमित थे जो उन क्षेत्रों में व्याप्त होता था लेकिन आज वे उनसे आगे बढ़कर इस योजना का लाभ ले रहे हैं तथा गोधन न्याय योजना उनकी सांस्कृतिक जीवन में एक अहम भूमिका निभा रही है।

गोधन न्याय योजना का उद्देश्य–

- जनजातीय क्षेत्रों में आजीविका उपलब्ध कराना।
- जनजातीययों को रोजगार प्रदान करवाना।
- जनजातीय क्षेत्रों में बसाहटों को विकसित करना।
- जनजातीयों के आर्थिक गतिविधियों में जोर देना।
- जनजातीय महिलाओं को सशक्त बनाना।

शोध पद्वति :–

प्रस्तुत शोध पत्र में हम जनजातीयों के पारंपरिक बसाहटों में बाह्य हस्तक्षेप गोधन न्याय योजना का सांस्कृतिक पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसमें लक्ष्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों के द्वारा किया गया है तथा अवलोकन व साक्षात्कार सूची का प्रयोग भी किया गया है एवं उत्तर, उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन प्रणाली के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :–

प्रस्तावित अध्ययन जनजाति पारंपरिक बसाहट में बाह्य हस्तक्षेप गोधन न्याय योजना का सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन(दन्तेवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ विषय पर आधारित है) दन्तेवाड़ा क्षेत्र भारत की सबसे प्राचीन व पुरानी बसाहटों में से एक है। जिन्होनें अपने जीवन शैली का तरीका नही बदला है। इस क्षेत्र का नाम यहां बसी आराध्य देवी दन्तेश्वरी के नाम पर ही पडा है। दक्षिण क्षेत्र में स्थिति दन्तेवाड़ा जिले का गठन बस्तर जिले से अलग कर 1998 को हुआ। यह क्षेत्र जनजातीय समूह का है। जिसमें प्राकृतिक सौदर्य, घने जंगल, सुंदर घाटियां नदी झरने व ऐतिहासिक महत्व के अनेकों मंदिरो का स्थापत्य जगह है। यहां की संस्कृति में अपने ही पूर्वजों की स्मृति में कई पाषाण स्तंभ लगाये गये है, जिससे यह प्रतीत होता है कि संस्कृति में कितनी गहराई है। इस क्षेत्र में अनेक जनजातीय समूह पाये जाते है। जैसे – हल्बा, माडिया, मुडिया, धुरवा, भतरा, गोंड। यहां संस्कृति के रूप में भिन्न–भिन्न कलाकृतियां देखने को मिलती है हर एक उत्सव में गीत, नृत्य व परम्परा ग्रामीण अंचलों में झलकती है। दन्तेवाड़ा में खनिज संसाधन के रूप में लौह अयस्क निक्षेप के साथ–साथ अन्य धातुएं भी पाई जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से 3410.50 वर्ग कि.मी. है। इस क्षेत्र की जनसंख्या 283479 है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. ग्रामीण जनजाति बसाहटों में गोधन न्याय योजना से संस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन।
2. जनजाति क्षेत्रों में गोधन न्याय योजना में संलग्न हितग्राहियों का अध्ययन।

विश्लेषण एवं सारणीयन :–

तालिका क्रमांक 1.1 में लिंग के आधार पर तालिका

क्र.	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1	महिला	30	60
2	पुरूष	20	40
योग : –		50	100

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.1 से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में 60 प्रतिशत महिला तथा 40 प्रतिशत पुरूष वर्ग है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं की संख्या अधिक है।

तालिका क्रमांक 1.2 में भाषा के आधार पर तालिका

क्र.	भाषा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	छत्तीसगढ़ी	13	26
2	गोंडी	27	54
3	अन्य	10	20
योग : –		50	100

अतः स्पष्ट होता है कि तालिका क्रमांक 1.2 भाषा में छत्तीसगढी बोलने वाले 26 प्रतिशत, गोंडी बोलने वाले 54 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत अन्य भाषा बोलने वाले है। इससे स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा गोंडी है।

निष्कर्ष :–स्पष्ट रूप से हम यह कह सकते है कि गोधन न्याय योजना जनजातीयों के जीवन में महत्वपूर्ण योजना के रूप में है इससे उनकी संस्कृति की क्षति नही पहुंची है साथ ही साथ ग्रामीण अंचल के लोग गोधन न्याय योजनाओं से धीरे–धीरे जुड रहें है तथा इस तरह की योजना जनजाति क्षेत्रों में परिवर्तन का कार्य कर रही है। पूर्व में जनजाति समूह रोजगार जंगलो में तथा आस–पास के क्षेत्रों में खोजा करते थे लेकिन उन्हें रोजगार मिले यह सुनिश्चित नही था लेकिन गोधन न्याय योजना के फलस्वरूप गांवों में अलग–अलग ग्राम पंचायतों में गौठानों के निर्माण के कारण जनजाति समूह अपने ही गांवो में रह कर विभिन्न कार्यो में संलग्न है। जिससे उनकी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वे गौठानों से संबंधित कार्यो को कर अपनी जीवन शैली में छोटी से बडी जरूरतों को पूरा कर रहें है साथ ही साथ आत्मनिर्भर हो रहे हैं, जिससे जनजाति पारंपरिक बसाहटों में गोधन न्याय योजना का प्रभाव देखने को मिल रहा है।

संदर्भ सूची :–

1. जनता से रिश्ता (27.10.2022) बदलता दंतेवाड़ा।
2. जनता से रिश्ता (22.11.2022) बदलता दंतेवाड़ा नई तस्वीर